



**SDF-C-HND**

**हिन्दी / HINDI**  
**( अनिवार्य ) / ( COMPULSORY )**

**निर्धारित समय : तीन घंटे**  
**Time Allowed : Three Hours**

**अधिकतम अंक : 300**  
**Maximum Marks : 300**

**प्रश्न-पत्र के लिए विशिष्ट अनुदेश**

**कृपया प्रश्नों के उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को ध्यानपूर्वक पढ़ें :**

सभी प्रश्नों के उत्तर लिखना अनिवार्य है।

प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने अंकित हैं।

उत्तर हिन्दी में ही लिखे जाएँगे, यदि किसी प्रश्न-विशेष में अन्यथा निर्दिष्ट न हो।

जिन प्रश्नों के संबंध में अधिकतम शब्द-संख्या निर्धारित है, वहाँ इसका अनुपालन किया जाना चाहिए। यदि किसी प्रश्न का उत्तर, निर्धारित शब्द-संख्या की तुलना में काफी लंबा या छोटा है तो अंकों की कटौती की जा सकती है।

प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका का कोई भी पृष्ठ अथवा पृष्ठ का भाग, जो खाली छोड़ा गया हो, उसे स्पष्ट रूप से काट दिया जाना चाहिए।

**Question Paper Specific Instructions**

**Please read each of the following instructions carefully before attempting questions :**

All questions are to be attempted.

The number of marks carried by a question is indicated against it.

Answers must be written in **HINDI** unless otherwise directed in the question.

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to and if answered in much longer or shorter than the prescribed length, marks may be deducted.

Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.



Q1. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर 600 शब्दों में निबन्ध लिखिए :

100

- सर्जनात्मकता का पोषण करने वाली शिक्षा की आवश्यकता
- भारत में वन्य जीवन संरक्षण की चुनौतियाँ
- किशोर मानस पर फ़िल्मों का प्रभाव
- दिव्यांगों का सशक्तिकरण

Q2. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उसके आधार पर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर स्पष्ट, सही और संक्षिप्त भाषा में दीजिए :

12×5=60

कुछ हज़ार वर्षों पूर्व तक मनुष्य पृथ्वी पर शिकारी मात्र था। नवपाषाण युग तक उसने कृषि के लिए बसना आरंभ नहीं किया था। दूरदराज के इलाकों में घूमे बिना वह ज़मीन की जुताई करके भोजन की आपूर्ति बढ़ाने में सक्षम हुआ और लगातार कृषि को उन्नत करने में लगा रहा। आज तक वह पहले की तुलना में अधिक और बेहतर भू-उपज लेने में सक्षम रहा है। लेकिन जहाँ तक समुद्रों का संबंध है, वह अब तक लगभग शिकारी ही है। वह मछलियों और दूसरे जल-जीवों को पकड़ता है, किंतु उनकी सतत वृद्धि और आपूर्ति को बनाए रखने के लिए सीमित प्रयत्न ही कर रहा है। अब तक जलीय शिकार से उसे अत्यधिक पौष्टिक प्रोटीन की काफ़ी आपूर्ति हुई है। यह भू-कृषि से प्राप्त प्रोटीन की आपूर्ति का पूरक है। लेकिन दुनिया की बढ़ती आबादी के कारण मनुष्य को शीघ्र ही समुद्र से इतने ज़्यादा प्रोटीन की आवश्यकता हो सकती है कि उसकी यह भारी और सतत आपूर्ति भी खतरे में पड़ जाएगी। इसलिए मनुष्य को समुद्री खेती के माध्यम से पर्याप्त आपूर्ति बनाए रखने के लिए क़दम उठाने होंगे।

लघु स्तर पर मछली-पालन तालाबों और झीलों में पहले ही सफलतापूर्वक किया जा चुका है। विशेष रूप से जल-विद्युत् परियोजनाओं के लिए बाँधों के निर्माण द्वारा बनाई गई कृत्रिम झीलों में यह कार्य किया गया है। मीठे पानी के तालाबों में मछली की उपज से प्रोटीन की आपूर्ति में पहले से वृद्धि हुई है। उनमें से कुछ का विकास ग्रामीण समुदायों में कृषि-अधिकारियों की मदद और पर्यवेक्षण से हो रहा है।

एक बार मछली-तालाबों को युवा मछलियों से समृद्ध कर देने पर मछलियों का स्वस्थ वातावरण में विकास संभव होता है और उनके भोजन की पर्याप्त आपूर्ति भी हो जाती है। पानी में बड़ी संख्या में तैरते हुए प्लवक — सूक्ष्मजीव एवं वनस्पति — जलीय प्राणियों के लिए मुख्य खाद्य हैं। छोटी मछलियाँ इन्हें खाती हैं और अपने से बड़ी मछलियों का भोजन बनती हैं। चूँकि प्लवक पानी में मौजूद खनिजों से वृद्धि पाते हैं, इसलिए प्लवक की मात्रा को पानी में अतिरिक्त उर्वरकों द्वारा बढ़ाया जा सकता है।

हालाँकि समुद्री खेती व्यावहारिक और लाभदायक दोनों हो सकती है, लेकिन इससे पहले कई समस्याएँ हल करनी होंगी। उदाहरण के लिए समुद्र के उस भाग में उर्वरक डालना उपयोगी नहीं है, जहाँ समुद्र की धाराएँ तेज गति से उर्वरकों को मीलों दूर अनुत्पादक पानी में ले जाती हैं। अगर मछली-पालक उर्वरकों को एक निश्चित क्षेत्र तक सीमित कर सके, तब भी उसे 'अपने क्षेत्र' तक उर्वरक-पोषित मछलियों को रखने का तरीका खोजना होगा। और अपने व्यय का अधिकतम लाभ प्राप्त करने के लिए उसे मछलियों को भोजन देने का ऐसा तरीका ढूँढ़ना होगा, जिससे वह भोजन उन्हीं मछलियों को मिले जिन्हें वह खिलाना चाहता है। उसे अखाद्य जल-जीवों को हटाने (निराई) की युक्ति लगानी होगी, जिससे वे उसकी मछलियों का भोजन साझा न करें।

स्पष्ट रूप से इन समस्याओं को हल करना बहुत आसान नहीं होगा — खासकर समुद्र की विशालता को देखते हुए, जो पृथ्वी की सतह के लगभग तीन-चौथाई को घेरे हुए है। समुद्रों का पानी तालाबों और झीलों की तुलना में धाराओं में निरंतर गतिशील रहता है। शायद समस्याओं को धीरे-धीरे हल किया जाएगा। निकट भविष्य में मनुष्य महाद्वीपों के पास उथले अप-तटीय पानी में छोटे पैमाने पर मछली-पालन शुरू कर सकता है। वहाँ वह ऐसी मछलियों का संग्रहण कर सकता है जिनका वह उत्पादन करना चाहता है, अपनी मछलियों के भोजन को खा जाने वाले अवांछनीय जल-जीवों को हटा सकता है, आवश्यकता के अनुसार उस क्षेत्र में उर्वरक डाल सकता है और अंततः समय-समय पर परिपक्व मछलियों की फ़सल को इकट्ठा कर सकता है।

- |   |    |
|---|----|
| (a) शिकार की तुलना में कृषि किस प्रकार बेहतर है तथा भविष्य में समुद्री-खेती क्यों आवश्यक होगी ? | 12 |
| (b) मछली-पालन में उर्वरकों की क्या भूमिका है ?  | 12 |
| (c) समुद्र के किस भाग में मछली-पालन आरंभ किया जा सकता है ?                                      | 12 |
| (d) 'निराई' शब्द से आप क्या समझते हैं ?   | 12 |
| (e) भविष्य में समुद्री खेती की समस्याओं का समाधान कैसे किया जा सकता है ?                        | 12 |

**Q3.** निम्नलिखित अनुच्छेद का संक्षेपण एक-तिहाई शब्दों में लिखिए। इसका शीर्षक लिखने की आवश्यकता नहीं है। संक्षेपण अपने शब्दों में ही लिखिए। **60**

भारत की विशाल आबादी ग्रामीण है। उनकी सामाजिक-आर्थिक स्थिति और उनके जीवन की गुणवत्ता में सुधार के लिए ग्रामीण बुनियादी ढाँचे में सर्वांगीण विकास की आवश्यकता है, जिससे समान और समावेशी विकास के दीर्घपोषित उद्देश्यों को प्राप्त किया जा सके। ग्रामीण बुनियादी ढाँचे का एक महत्वपूर्ण घटक पेयजल व्यवस्था है। पानी निस्संदेह एक महत्वपूर्ण लोकहित है। नागरिकों की माँगों को पूरा करने के लिए, पानी के बुनियादी ढाँचे के निर्माण के

